Principal

PRINCIPAL

अक्टूबर-दिसम्बर 2023
से
जनवरी-मार्च 2024

ISSN 2278-554 X Lamhi

लमही

UGC Care Listed

मूल्य : ₹100

स्त्री कविता की ज़मीन और कविता का वर्तमान

125 स्त्री कवियों की कविताई पर सात खंडों में सामग्री

अतिथि संपादक
शशिभूषण मिश्र

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

लमही

वर्ष: 16, अंक: 2-3, अक्टूबर-दिसम्बर 2023 से
जनवरी-मार्च 2024

UGC Care Listed

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

स्मृति का उजास

1. स्नेहमयी चौधरी : अपने ख़िलाफ़ चौतरफा लड़ाई — सुधा उपाध्याय — 13
2. निर्मला ठाकुर : स्मृतियों में बसा एक कवितामय जीवन — सुधीर सिंह — 18
3. अर्चना वर्मा : बहुत कुछ कहा जाना और सुना जाना है — सोनाली मिश्र — 21
4. रजनी तिलक : दलित स्त्री आंदोलन का विद्रोही स्वर — पूनम तुषामड़ — 24
5. रश्मि रेखा : समय से संवाद की कवयित्री — चितरंजन कुमार — 27

समकालीनता की बीजभूमि

1. शुभा : हम जो कर रहे, वह नृत्य ही तो है — आरती — 33
2. निर्मला गर्ग : कविता की शक्ल में जीने की शर्त — सिद्धार्थ शंकर राय — 37
3. तेजी ग्रोवर : यह पीला उम्र में बड़ा है — अमिता — 41
4. गगन गिल : कोई बतलाए कि हम बतलाएं क्या — विपिन चौधरी — 46
5. कात्यायनी : प्रतिरोध और साहस का स्वर — प्रीति चौधरी — 50
6. अनामिका : स्त्री कविता का एक अपरिहार्य नाम — ऋत्विक भारतीय — 54
7. अजंता देव : स्त्री कविता का अलहदा स्वर — सोनी पाण्डेय — 60
8. अनीता वर्मा : कविता की जीवन-संवेदना और सरोकार — कुमारी उर्वशी — 63
9. सुमन केशरी : स्त्री-अभिव्यक्ति का संघर्ष — आनंद पांडेय — 67

समकालीनता की नयी भूमि

1. सविता सिंह : स्त्री स्वर का अपनापन — संदेश नायक — 73
2. पूनम सिंह : कविता के प्रति आस्था — कमलेश वर्मा — 77
3. सविता भार्गव : सृजन का धैर्य — निशि उपाध्याय — 81
4. नीलेश रघुवंशी : कविता निर्बलतम का पक्ष है — कीर्ति जैन — 84

विभाजित स्त्री-विमर्श के विरुद्ध स्त्रीबोध का मुकम्मल दस्तावेज़

डॉ. पूनम सिंह

युगीन परिप्रेक्ष्य में अनुभव से प्राप्त ज्ञान ही बोध कहलाता है। बोध एक गतिशील अवधारणा है, जिसे व्यक्ति अर्जित और समृद्ध करता रहता है। स्त्रीबोध स्त्री के निजी बोध को विषय बनाने के साथ स्त्री के प्रति निर्मित एवं अनिवार्य संभावित बोध को भी अपने दायरे में लेता है। स्त्रीबोध उस चेतना को कहेंगे, जिसके सहारे परिवेश विशेष में स्त्री के स्वत्व का बदलते संदर्भ में आंकलन किया जाता है। किन्हीं आयामों में अनिता भारती स्त्री-अस्मिता को गौरव का विषय बनाती हैं, साथ ही उसके चेतना संपन्न अस्तित्व के प्रति हमें विमर्श की उर्वर जमीन भी उपलब्ध कराती हैं। अस्मिता का बोध उनकी स्त्रियों में स्त्री विमर्श से कहीं आगे विमर्श के मध्यवर्गीय स्त्री सरकारों से सीधे सवाल का पर्याय बन जाता है। जहां विमर्श ने स्त्री और पुरुष को आमने-सामने खड़ा किया, वहीं अनिता भारती ने प्रचलित स्त्री विमर्श के संकुचित स्वरूप की खबर लेने के निमित्त मुख्य-धारा की विमर्शकार स्त्रियों एवं इनके विषय बन रही हाशिये की स्त्रियों को आमने-सामने ला खड़ा किया। अनिता भारती का स्त्रीबोध पितृसत्ता के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक ही नहीं, वैश्विक संदर्भों में भी अपनी प्रतिक्रियाशील उपस्थिति दर्ज करता है। विभाजित स्त्री विमर्श को समग्रता प्रदान करते हुए प्रचलित की जगह व्यावहारिक मुद्दों के साथ विमर्श को फलितार्थ करने के निमित्त अनिता भारती का स्त्रीबोध विवेचनीय है।

अनिता भारती का स्त्रीबोध प्रचलित स्त्री विमर्श के रूढ़ हो चुकने के कारण प्रतिरोध की दिशा में गतिशील है। मध्यवर्गीय स्त्री संदर्भ हो या सवर्ण स्त्री संदर्भ, दोनों मामलों में विमर्श का चुक जाना हमारे समय की नियति बन गया है। 'फर्क', 'झुनझुना' और 'स्यूडो फेमनिस्ट' कविताएँ स्त्री और स्त्री के बीच वर्गीय भेद को विषय बनाती हैं। ये कविताएँ संख्या में कम होने के बावजूद वर्ग और जाति के संदर्भ में स्वस्थ विमर्श की मांग करती हैं। कवयित्री लिंग-भेद के पितृसत्तात्मक परिणामों के अभ्यस्त स्त्री विमर्श को सवालों के घेरे में लेती हैं– 'मैंने तुमसे पूछा/स्त्री आजादी का मतलब क्या है?/क्या अनेक मर्दों से/संबंध बनाने की स्वतंत्रता?/या फिर अपने निर्णय/स्वयं लेने की क्षमता?/या कोरी उच्छृंखलता?'[1]

समाज की वैचारिक समृद्धि की एक कसौटी है स्त्री जीवन का दिशा-बोध। इसी नाते स्त्री-अस्मिता को मानवीय अस्मिता का दर्जा भी दिया गया और पितृसत्तात्मक संरचना का प्रतिरोध सहज ही उस समाज का स्त्रीबोध समझ लिया गया। स्त्रीबोध गौरव का विषय हो सकता है, लेकिन यह कैसे खंडित और विकारग्रस्त हो गया है, इसकी परख अनिता भारती ने बखूबी की है। एक ओर मुख्यधारा का मध्यवर्गीय स्त्रीबोध है, तो उसके समानांतर मेहनतकश, उपेक्षित स्त्री सत्य। कवयित्री वर्ग में विभाजित स्त्री समाज के लिए प्रचलित विमर्श को अपर्याप्त और संकुचित महसूस कराती हुई 'कभी-कभी सोचती हूं मैं' कविता में लिखती हैं-'तुम 'मैं' कहते हो/और मैं 'हम'/तुम्हारे मैं में सिमटी है/आत्ममुग्धता, प्रशंसा/और हमारे हम में छिपी/है नीले सूरज की आग।'[2]

'मैं' और 'हम' का फर्क कविता में बखूबी स्पष्ट किया गया है। कविता में 'मैं' व्यक्तिनिष्ठ भाव है, तो 'हम' समष्टिगत निजी भाव। स्त्री विमर्श फैशनपरस्त हो जाने के कारण सीमित स्त्रीबोध का विमर्श बनकर रह गया है। तब ऐसे विमर्श पर विमर्श की जरूरत सहज ही अति पर की गई जरूरी आपत्ति के रूप में दर्ज की जानी चाहिए। अनिता भारती प्रचलित स्त्री विमर्श की सीमाओं के प्रति प्रतिरोध का मानवीय व्याकरण रचती हैं। वर्ग विभाजित स्त्री सरकारों को आईना दिखाती स्त्री के वर्गीय भेद में व्याप्त रुचि-बोध के फर्क को 'फर्क' कविता में रेखांकित करती हैं-'तुम्हें पसंद है/गोरा-गोरा गोल-गोल/सुंदर चांद/हमें पसंद है/परिश्रम की आग में तपे/लाल तवे पर/सिकती/रोटी की गंध।'[3] स्त्री और स्त्री के बीच का वर्गीय फर्क विमर्श के खंडित सत्य को विषय बनाता है। इस फर्क में एक ओर मध्यवर्गीय जीवन में प्यार, सेक्स, बलात्कार

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya

संदर्भित यौन प्रसंग विषय सत्य हैं, तो दूसरी ओर श्रम एवं भूख। यह फर्क स्त्री के समग्र बोध के लिए हानिकारक है, 'तुम्हें पसंद है/शब्दों के खेल में/जीवन के पर्याय/बताना/प्यार सेक्स बलात्कार/यौनिकता पर थोड़ा/रूमानी होते हुए चर्चा छेड़ना/और हमें पसंद है/इस खेल के व्यापार को/एक विस्फोटक डिब्बे में/बंद कर/एक तिल्ली से उड़ा देना।'[4]

स्त्री विमर्श के ऐसे संदर्भों के प्रति निम्नवर्गीय स्त्री का'एक विस्फोटक डिब्बे में बंद कर एक तिल्ली से उड़ा देना' जैसा मंतव्य ऐसे विषयों और संदर्भों को एक सिरे से खारिज करता है। स्त्री विमर्श के पश्चिमीवादी सरोकार के बरक्स मृदुला गर्ग ने 'देसी फेमिनिस्ट' के स्त्रीबोध पर सटीक टिप्पणी की है-'फेमिनिस्ट का क्या लक्षण है? तो मैं कहूंगी, वह औरत, जो अपने घर का कचरा, बाहर सड़क पर नहीं फेंकती। कारगर फेमिनिस्ट वह है, जो सड़क पर अपना कचरा तो फेंकती ही नहीं, दूसरों का फेंका कूड़ा भी साफ करवा लेने का माद्दा रखती है।'[5] इस पृष्ठभूमि में अनिता भारती के मध्यवर्गीय सीमित स्त्रीवादी सरोकार पर किए गए प्रहार युक्तिसंगत प्रतीत होते हैं। फेमिनिस्ट होना एक शगल नहीं है, बल्कि सच्चे अर्थ में अपने परिवेश के प्रति समग्र संरचना-बोध के साथ स्त्री नजरिए को सृजनात्मक लक्ष्य प्रदान करना है। इस सृजनात्मक लक्ष्य की जगह वर्ग विशेष तक सीमित हो जाना, कहीं ना कहीं 'समय सत्य' की जगह 'निजी सत्य' तक सिमट कर अपने लिए तथाकथित स्त्रीत्व का उत्सव मनाने जैसा है। ऐसे उत्सव धर्मी विमर्श को समूल उड़ा देना महज प्रतिक्रियामूलक विचार नहीं है, बल्कि विमर्श की सृजनात्मक संभावनाओं के प्रति अनिवार्य प्रतिरोध है।

विमर्श का एक पक्ष सवर्ण स्त्रियों का रहा, तो दूसरा पक्ष समाज में दलित स्त्रियों का भी रहा है। अनिता भारती मेहनतकश, संघर्षशील एवं दलित स्त्रियों के प्रति विमर्श के दायरे को उदार और व्यापक बनाने की पहल करती हैं। 'भेददृष्टि' कविता सवर्ण स्त्री समाज की सीमाओं से हमें अवगत कराती है-'तुमने कहा पितृसत्ता/हमने कहा/ब्राह्मणवादी पितृसत्ता/तुम्हारी जमात ने कहा/बस याद रखो/स्त्री तो स्त्री होती है—/ना वह दलित होती है ना ही सवर्ण/हमारी जमात ने कहा/समाज में वर्ग है श्रेणी है जाति है/इसलिए स्त्री/दलित है ब्राम्हण है/क्षत्रिय है वैश्य है और शूद्र है।'[6]

दलित स्त्री की लड़ाई केवल पितृसत्ता से नहीं, बल्कि ब्राह्मणवादी पितृसत्ता से भी है। कवयित्री यह मानती हैं कि जब तक स्त्री समाज वर्ग, श्रेणी और जाति में बंटा रहेगा, तब तक सामाजिक स्तर पर समानता संभव नहीं है। विशेषकर दलित स्त्री समाज के लिए तो यह दूर की कौड़ी ही है। अनिता भारती के काव्य में एक ओर विमर्श करता वर्गीय परिप्रेक्ष्य में समृद्ध स्त्री समाज है, तो दूसरी ओर जाति आधारित सवर्ण और दलित स्त्री समाज। इन दोनों समाज से विमर्श का जो र[illegible]ा, उसमें प्रत्यक्ष रूप से विपन्न और दलित [illegible]ता भारती का विमर्शकारी सरोकार समग्रता की मांग करता है। यहां आलोचक सविता सिंह का मंतव्य उल्लेखनीय प्रतीत होता है— 'कोई सवर्णवादी स्त्री विमर्श हो ही नहीं सकता, मेरा तो यह मानना है। सैद्धांतिक रूप से अगर स्त्रीवाद है, तो वह समावेशी होगा, अन्यथा वह पितृसत्ता का ही एक दूसरा संस्करण है, जो स्त्रियों द्वारा गढ़ा जा रहा है।'[7] यह सत्य है कि स्त्री विमर्शकारों ने सवर्ण स्त्रीवाद जैसी कोई अवधारणा विकसित नहीं की, लेकिन अनिता भारती ने प्रचलित विमर्श की जिस संरचना को विषय बनाया, वह युक्तिसंगत है। विमर्श की संभावित प्रामाणिकता के आधार पर कहा जा सकता है कि जिस तरह दलित की आत्मघटित अनुभूतियां अपेक्षाकृत प्रमाणिक अभिव्यक्ति की संभावना लिए होती हैं, उसी तरह तथाकथित सवर्ण स्त्रीबोध आत्मघटित सत्य को स्वभावतः प्रमाणिक अभिव्यक्ति देने में सीमित रह गया, सीमित से आगे आत्मकेंद्रित हो गया। यही कारण है कि जब महिला आरक्षण की बात चली, तो जाति के आधार पर 'आरक्षण में आरक्षण' की मांग उठ गई। यह मांग सतह पर अनुचित प्रतीत होती है, लेकिन पुरुष वर्चस्व की तरह सवर्ण स्त्री वर्चस्व जिस कदर स्वयं में पूर्णता का बोध पाले है, उसके विरुद्ध दलित स्त्रीबोध का तनकर खड़ा होना, अनिता भारती के स्त्रीबोध को जायज ठहराता है।

पितृसत्तात्मक मूल्यों के विरुद्ध अपने अस्तित्व को बनाए रखने की लड़ाई पूरे स्त्री समाज की है, विशेषकर समर्थ, शिक्षित, बुद्धिजीवी स्त्री समाज की। इसी के तहत स्त्री विमर्श की जरूरत महसूस की गई। विडंबना यह है कि आज स्त्री विमर्श अपने मुद्दों से भटक कर देह विमर्श में तब्दील हो गया है। ऐसे छद्म स्त्री विमर्शकारों को फटकारती हुई कवयित्री लिखती हैं-'तुम्हारी अपनी कुंठाए/अपनी महत्वाकांक्षा/केवल और केवल/अपने बारे में सोचते हुए/आंदोलन और आजादी के/नाम पर/भोग विलास में डूबे जीवन के/झंडे गाड़ना बंद करो।'[8] यह आक्रोश स्वाभाविक है क्योंकि स्त्री समाज के हित के दावेदार स्त्री विमर्श की छद्म वैचारिकी को कवयित्री भली-भांति समझ चुकी हैं। प्रचलित स्त्री विमर्शकारों के यहां आजादी, समानता, आधुनिकता सब कुछ वर्ग विशेष अर्थात् अपने वर्ग की स्त्रियों के लिए है, ना कि स्त्री जाति के लिए। ये सारे मूल्य अपनी प्रकृति में छद्म रचने वाले हैं। इसीलिए कवयित्री विमर्श के आत्मकेंद्रित चेहरे को 'झुनझुना' कविता में बेनकाब करती हैं 'अच्छा है तुम चुपचाप/हमारे साथ रहो/आंख मुंह कान पर पट्टी बांधे/सब्र का फल हमेशा मीठा होता है/जब हम मुक्त होंगी तब/तुम्हारा हिस्सा/तुम्हें बराबर दे देंगी।'[9]

हाशिये की निम्न वर्गीय मेहनतकश कामगार स्त्रियां अनिता

PRINCIPAL

अनिता भारती ने यह बखूबी महसूस किया है कि निम्नवर्गीय परिवारों की प्रत्येक स्त्री कामगार बनने को मजबूर है, चाहे वह 'मासूम' कविता की सफाई कर्मी चंद्रो हो या 'जहांगीरपुरी की औरतें' कविता का झुग्गियों में रहने वाला स्त्री समाज, जो पॉश कॉलोनी के सुख साधन, सड़कों की सफाई, पन्नी चुनने के साथ ही फैक्ट्रियों में भी खुद को खपा देता है।

भारती के स्त्रीबोध का विषय रही हैं। कविता 'हमें तुम्हारी बेटियां पसंद हैं' घरेलू कामगार बच्ची के प्रति मध्यवर्गीय स्त्री की सोच उसकी निजी पारिवारिक यथास्थिति के साथ स्त्री चेतना का व्यापक परिदृश्य निर्मित करती है-'हमें जरूरत है/ऐसी ही लड़की की/जो हों अल्प वयस्क/जो मन लगाकर काम कर सकें सारे/अब हम करें भी तो/क्या करें?/हमारे बच्चे ठहरे/निपट निकम्मे/एक गिलास पानी तक/खुद नहीं पी सकते/अपने गंदे कपड़े उतार/फेंकने की आदत है उन्हें इधर-उधर।'[10]

अनिता भारती ने यह बखूबी महसूस किया है कि निम्नवर्गीय परिवारों की प्रत्येक स्त्री कामगार बनने को मजबूर है, चाहे वह 'मासूम' कविता की सफाई कर्मी चंद्रो हो या 'जहांगीरपुरी की औरतें' कविता का झुग्गियों में रहने वाला स्त्री समाज, जो पॉश कॉलोनी के सुख साधन, सड़कों की सफाई, पन्नी चुनने के साथ ही फैक्ट्रियों में भी खुद को खपा देता है। 'आठ मार्च' कविता ग्रामीण निम्नवर्गीय तथा शहरी निम्नवर्गीय और निम्नमध्यवर्गीय कामगार महिलाओं की यथास्थिति की ईमानदार अभिव्यक्ति है। चाहे खेत-खलिहान में बेगार खटने वाली कमला, सुनीता, विमला जैसी ग्रामीण अशिक्षित निम्नवर्गीय स्त्रियां हों या क्लर्क, आया, टीचर, सेल्समैन, जैसी शहरी अल्पशिक्षित या शिक्षित निम्नवर्गीय और निम्नमध्यवर्गीय स्त्रियां, दोनों के लिए ही आठ मार्च (अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस) का कोई अर्थ नहीं दिखता। इन स्त्रियों के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता में मुक्ति केवल भ्रम ही नहीं, बल्कि सफेद झूठ साबित होता है। ऐसे समय अगर उम्मीद कहीं बची है, तो सिर्फ नयी पीढ़ी से। इसी उम्मीद को व्यक्त करती ये पंक्तियां विचारणीय हैं-'कितनी सरिताएं/कंधों पर झोले लादे/समाज बदलाव के विचार से/लवरेज/अपनी फटी जींस पर/आदर्श का मफलर डाल/मानवता के फटे जूते पहन/जायेंगी/गांव-देहात, स्लम/और एक दिन/मारी जायेंगी/शायद महिला दिवस/उनसे ही आएगा' 11 पढ़ी-लिखी, जुझारू, कर्मशील स्त्रियां ही सामाजिक स्तर पर बदलाव ला सकती हैं, कवयित्री को यह उम्मीद है। प यह लक्ष्य आसान नहीं है, जान का जोखिम भी है।

अनिता भारती ने स्त्री-अस्मिता को स्त्रीबोध का अनिवार्य चरण माना हैं। पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष की नजर में स्त्री भले ह उपेक्षित और नगण्य हो, पर जरूरत इस बात की है कि स्त्री स्व अपने वजूद को सम्मान दे। स्त्री जब तक अपने स्वत्व की पहचा स्वयं नहीं करेगी, तब तक उसकी मुक्ति संभव नहीं है। वह स्त्र के पीढ़ीगत अंतराल की संभावनाओं को 'रहस्य' शीर्षक कविता म बखूबी पेश करती हैं। एक तरफ घर की दहलीज में अभ्यस्त म की पीढ़ी है, तो दूसरी ओर अपने अधिकारों के प्रति सचेत, लाचा कवयित्री के समय की पीढ़ी की स्त्रियां हैं, जिनमें आजादी के लि सुनियोजित दृष्टि का अभाव है, पर तीसरी पीढ़ी है बेटियों की जिनके प्रति कवयित्री पूरी तरह से आशान्वित हैं-'पर मेरी बेटी/ज हम सब के भविष्य की/सुनहरी नींव है/जो जन्म घुट्टी में सीख रह है/सवाल करना/कब से?/क्यों?/कैसे?/किसका?/मुझे पता है, वह हालत बदल देगी/उसमें है वह जज्बा/लड़ने का, बराबरी का, क्योंकि उसे पता है/संगठन, एकता का रहस्य।'[12]

स्पष्ट है कि मध्यवर्ग एवं निम्नवर्ग तथा सवर्ण एवं दलित स्त्रिय के साथ-साथ अन्य स्त्रियां जब तक एकजुट नहीं होंगी, तब तक उनके लिए मुक्ति का लक्ष्य सुखद स्वप्न बनकर ही रह जाएगा इस नाते वर्ग, वर्ण की सीमाओं से आगे बढ़कर जब स्त्रीत्व क भाव समग्रता में निर्मित होगा, तब स्त्री सच्चे अर्थ में चेतना संपन्न हो जायेगी और उसे कैद कर पाना संभव नहीं रहेगा। वह घर- बार के खूंटे से नहीं बंधेगी, ना ही भांड़े-बर्तन, कपड़े-लत्ते की निर्भरशीलता में अपने आत्मसम्मान का समझौता करेगी। कवयित्र के मतानुसार-'तुम्हारे मजबूत हाथों से/बर्फ-सी फिसल जायेगी, तन-मन से स्वतंत्र वह/मुक्ति गीत गायेगी—/गुलामों की परिभाषा, नहीं गढ़ेगी/अपनी आंखों में पले/आजादी के स्वप्न के बीज से/ह आंखों में अंकुर जगायेगी।'[13] इस कविता में कवयित्री ने स्त्री-मुक्ति का सच्चा और सार्थक स्वरूप पेश किया है। स्त्री-मुक्ति का अर्थ अकेले की मुक्ति नहीं, बल्कि अपने साथ अपने जैसों की मुक्ति से है। इसीलिए मुक्त स्त्री का पहला लक्ष्य स्त्री समाज को मुक्ति की दिशा में गतिशील करना है। यह एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, जो कवयित्री आज की आधुनिक स्त्रियों पर सौंपती हैं।

अनिता भारती के स्त्रीबोध का एक अनिवार्य आयाम स्त्री-पुरुष संबंधों के संदर्भ में निर्मित होता है। वे पुरुष के पारंपरिक रूप को अस्वीकार करती हैं। उनके अनुसार पारंपरिक पुरुष शोषक के रूप में ही अपनी उपस्थिति दर्ज करता है, इसीलिए वे स्त्री-पुरुष संबंधों में समानता की मांग करती हैं-'क्या ये संभव है/हम और तुम दोनों जिये एक ऐसे रिश्ते में/न जिसमें/तुम रहो एक पुरुष/और न ही म

औरत/दोनों/अपने अस्तित्व से परे/रहे बस बनकर/घनिष्ठ दोस्त/या फिर दो पक्की सहेलियाँ।'[14]

अंबेडकर ने आजीवन दलितों एवं स्त्रियों के सम्मान और अधिकार के लिए संघर्ष किया, पर आजाद भारत में अंबेडकर एक ऐसी चादर बन गए हैं, जिसे हर राजनैतिक दल अपने फायदे के लिए इस्तेमाल कर रहा है। कवयित्री अवसरवादी राजनीति के घिनौने चेहरे को बेपर्दा करती हैं। वे जानती हैं कि शासक वर्ग के लिए दलित सिर्फ एक मुद्दा है, जिस पर साल दर साल राजनैतिक रोटियां सेंकी जा सकती हैं। उसकी पीड़ा, उसकी समस्याओं से किसी का कोई सरोकार नहीं है-'जिनको सौंप दी थी/हमने परिवर्तन की चाभी/अपना भाई-बंधु, मित्र/हमराही समझकर/आज वे/उस ताले की चाभी से/राजनीति के पेंच खोलने लगे हैं/वे सब जो कभी कहलाते थे/अमनपसंदी, लोकवादी/विकासवादी जनतांत्रिकी/आज ये दिन-दहाड़े सियारों की तरह हुआं-हुआं कर/माहौल को और भयंकर/बना रहे हैं'[15]

नन्ही पीढ़ी को उस सड़ांध से बचाने की चिंता उनके स्त्रीबोध को सार्थक दिशा प्रदान करती है। अनिता भारती सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में वर्षों से सक्रिय रही हैं। इसीलिए जहां भी शोषण और अत्याचार दिखाई देता है, उनका स्वर विद्रोही हो उठता है। बलात्कार एवं सांप्रदायिक दंगों जैसे समसामयिक घटनाओं के संदर्भ में उनके स्त्रीबोध का प्रतिक्रियाशील स्वरूप स्त्री समाज को प्रतिरोध की दिशा में प्रेरणा देता है। कविता 'तुम निर्वस्त्र नहीं हो मनोरमा' में सेना द्वारा बलत्कृता के पक्ष में आंदोलन कर रही निर्वस्त्र स्त्रियां हों, या कविता 'रुखसाना का घर' में मुजफ्फरपुर दंगे की शिकार रुखसाना हो, अनिता भारती का लेखकीय सरोकार सदा गतिशील बना रहता है।

अनिता भारती स्त्री संदर्भों में किसी भौगोलिक सीमा को एक सिरे से ख़ारिज कर देती हैं। इसीलिए पाकिस्तानी बच्ची मलाला के लिए उनका मातृत्व बोध 'बिटिया मलाला के लिए' जैसी कविताओं को जन्म देता है। ये स्त्री शिक्षा के लिए संघर्षरत चौदह वर्षीय मलाला के संघर्ष में सावित्रीबाई फुले का संघर्ष देखती हुई कहती हैं–'सुनो, मलाला बिटिया!/इन जंगली गिद्धों ने जबरन/बंद कराये थे/जो चार सौ स्कूल/उनकी नई चाभी खोजनी है तुम्हें/क्योंकि ये फ़क़त स्कूल नहीं/ये रोशनी की ये मीनारें हैं/जिस पर चढ़ना है/तुम्हारी नन्ही सहेलियों को/जहाँ से नीचे झांकने पर/दुनिया के तमाम बदनुमा धब्बे/और ज्यादा साफ दिखायी देने लगते हैं/और उनसे लड़ना/ज्यादा आसान हो जाता है।'[16]

अनिता भारती का स्त्रीबोध विमर्श की जमीन पर प्रतिरोध को मुकम्मल बनाता है। उनका स्त्रीबोध स्त्री विमर्श को खांचे से बाहर निकाल कर स्त्रीत्व के बहुआयामी एवं उदार दायरे की स्थापना करता है। स्त्री होने के नाते स्त्री के पक्ष म संवेदना का अपना सरोकार बनाने की जगह स्त्री समाज के विमर्शकारी अंतर्विरोधों को बखूबी पहचान कर स्त्री चेतना को सही दिशा देने की पहल करता है। लेखन को महिला और पुरुष में विभाजित करने की कवायद के वर्षों बाद अनिता भारती विमर्श में सवर्ण स्त्रीवाद और दलित स्त्रीवाद की व्यावहारिक अनिवार्यता का बोध भली-भांति कराती हैं। महिला आरक्षण के तहत 'आरक्षण में आरक्षण' का जो सवाल उठा उसकी पृष्ठभूमि प्रचलित विमर्श में ही किस कदर निहित है, इसकी खबर हमें इनके काव्य के माध्यम से मिलती है। समग्रता में अनिता भारती की संवेदना स्त्री चेतना को एक वैचारिक ऊंचाई प्रदान करती है। इनका स्त्रीबोध प्रचलित 'स्त्रीवाद का देसी संस्करण' है। समय समाज के प्रति इनकी सक्रियता इनके स्त्रीबोध को धार प्रदान करती है। यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि इनके आक्रोश के पीछे गहरी संवेदना एवं करुणा का वैचारिक प्रवाह सदा बना रहता है। इनका स्त्रीबोध अपने लेखकीय सरोकार के साथ समाज को व्यावहारिक जीवन बोध प्रदान करता है। अंततः अनिता भारती का स्त्रीबोध समय समाज का मुकम्मल दस्तावेज है।

संदर्भ-

1. http://kavitakosh.org/kk/शुनशुना_/_अनिता_भारती
2. http://kavitakosh.org/kk/कभी-कभी_सोचती_हूँ_मैं_/_अनिता_भारती
3. http://kavitakosh.org/kk/फर्क_/_अनिता_भारती
4. http://kavitakosh.org/kk/फर्क_/_अनिता_भारती
5. देसी फेमिनिस्ट, मृदुला गर्ग, चूकते नहीं सवाल, सामयिक प्रकाशन, संस्करण 2007, पृष्ठ 79
6. http://kavitakosh.org/kk/भेददृष्टि_/_अनिता_भारती
7. ताना बाना, 0 मिनट 56 सेकेंड से 11 मिनट 11 सेकेंड तक, https://youtu.be/KM50hfgNkgU
8. http://kavitakosh.org/kk/स्यूडो_फेमिनिस्ट_/_अनिता_भारती
9. http://kavitakosh.org/kk/शुनशुना_/_अनिता_भारती
10. http://kavitakosh.org/kk/हमें_तुम्हारी_बेटियाँ_पसंद_हैं_/_अनिता_भारती
11. http://kavitakosh.org/kk/होना_/_अनिता_भारती
12. http://kavitakosh.org/kk/कविता:एक(बुनियादी_तौर_पर...)_/_अनिता_भारती
13. http://kavitakosh.org/kk/रहस्य_/_अनिता_भारती
14. http://kavitakosh.org/kk/मशाल_/_अनिता_भारती
15. http://kavitakosh.org/kk/जरूरत_/_अनिता_भारती
16. http://kavitakosh.org/kk/बिटिया_मलाला_के_लिए-3_/_अनिता_भारती

संपर्क : असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
कालीपद घोष तराई महाविद्यालय
बागडोगरा, दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल
मो. 8637325810